IB DIPLOMA PROGRAMME
PROGRAMME DU DIPLÔME DU BI
PROGRAMA DEL DIPLOMA DEL BI

M05/2/ANHIN/SP1/HIN/TZ0/XX/T

22052811

HINDI *AB INITIO* – STANDARD LEVEL – PAPER 1
HINDI *AB INITIO* – NIVEAU MOYEN – ÉPREUVE 1
HINDI *AB INITIO* – NIVEL MEDIO – PRUEBA 1

Monday 16 May 2005 (morning)
Lundi 16 mai 2005 (matin)
Lunes 16 de mayo de 2005 (mañana)

1 h 30 m

TEXT BOOKLET – INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this booklet until instructed to do so.
- This booklet contains all of the texts required for Paper 1.
- Answer the questions in the Question and Answer Booklet provided.

LIVRET DE TEXTES – INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- N'ouvrez pas ce livret avant d'y être autorisé(e).
- Ce livret contient tous les textes nécessaires à l'épreuve 1.
- Répondez à toutes les questions dans le livret de questions et réponses fourni.

CUADERNO DE TEXTOS – INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra este cuaderno hasta que se lo autoricen.
- Este cuaderno contiene todos los textos para la Prueba 1.
- Conteste todas las preguntas en el cuaderno de preguntas y respuestas.

पाठांश (क)

क्या आप जानते हैं?

- मच्छरों को नीला रंग सबसे ज़्यादा भाता है।
- चलते समय अगर हम मोबाइल पर बात करें, तो इसका असर हमारी रीढ़ की हड्डी पर पड़ता है।
- सिर्फ़ जानवरों के काटने से ही रेबीज़ नहीं होता, बल्कि यदि शरीर का कोई अंग कट जाए और उस स्थान को जानवर चाट जाए, तो भी रेबीज़ होने की संभावना हो सकती है।
- अक़्सर सभी सोचते हैं कि अकेले बच्चों में शर्मिलापन ज़्यादा होता है, पर यह ग़लत धारणा है। ऐसे बच्चों में आत्मविश्वास ज़्यादा होता है और वे कामयाब भी ज़्यादा होते हैं।
- गर्मी हो या सर्दी, हर किसी को कम से कम १० गिलास पानी तो पीना ही चाहिए। लेकिन यदि आप मोटे हैं, तो पानी की मात्रा इससे ज़्यादा लेनी चाहिए।
- पुरूषों से पहले महिलाओं के चेहरे पर झुर्रियां पड़ती हैं।
- बायां फेफड़ा दाएं फेफड़े से छोटा होता है, ताकि ह्रदय के लिए जगह बन सके।
- जो महिलाएं शाम की अपेक्षा सुबह कसरत करती हैं, उन्हें शाम को कसरत करनेवाली महिलाओं की तुलना में रात में ज़्यादा गहरी नींद आती है।
- विटमिन बी हमें डिप्रेशन से बचाता है।
- जो बच्चे जल्दी बोलते हैं, वे आगे जाकर होशियार होंगे, इस धारणा में कोई सचाई नहीं है। ज़्यादा या कम बोलना आनुवंश्किता पर निर्भर करता है।
- जो लोग रात को जाग कर काम करते हैं या पूरी नींद नीं लेते, उन्हें अल्सर होने का खतरा हो सकता है।
- ७० साल की उम्र के बाद ब्लड प्रेशर का थोड़ा बढ़ना फायदेमंद होता है। इससे याददाश्त तेज होती है।

पाठांश (ख)

नन्हें पंकज ने की कलाम से बड़ी बड़ी बातें

बिहार के गोपालगंज ज़िले के पंकज कुमार सिंह पहुंचे दिल्ली आप सोच रहे होंगे कि इसमें बड़ी बात क्या है? बड़ी बात ये है कि गोपालगंज के भटवलिया गाँव के पंकज साढ़े आठ साल के हैं, पाँचवीं कक्षा में पढ़ते हैं और डेढ़ घंटे राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम से मुलाक़ात करके आए हैं।

पंकज ने राष्ट्रपति कलाम के बच्चों से मिलने जुलने की ख़बरें सुनी थी, तो उन्हें भी इच्छा हुई राष्ट्रपति से मिलने की। फिर क्या था उन्होंने अपनी इच्छा ज़ाहिर करते हुए राष्ट्रपति को पत्र लिखा। पंकज उस समय झूम उठे जब उनके पास मुलाक़ात का बुलावा भी आ गया।

पंकज कहते हैं कि राष्ट्रपति से मुलाक़ात के दौरान उन्होंने कुछ मांगें भी रखीं हैं।

राष्ट्रपति कलाम ने उनकी माँगों को ध्यान से सुना। बिहार में बाढ़ की स्थिति के बारे में भी पंकज ने राष्ट्रपति को जानकारी दी।

राष्ट्रपति ने इस बच्चे से वादा किया है कि जब भी वे बिहार आएँगे, उसके घर ज़रूर आएँगे। साथ ही इस बच्चे की पढ़ाई का सारा ख़र्च भी उठाने को राष्ट्रपति तैयार हो गए हैं। पंकज बड़े होकर राष्ट्रपति की तरह एक वैज्ञानिक बनना चाहते हैं और साथ ही देश की अन्य नामी-गिरामी हस्तियों से मिलना चाहते हैं।

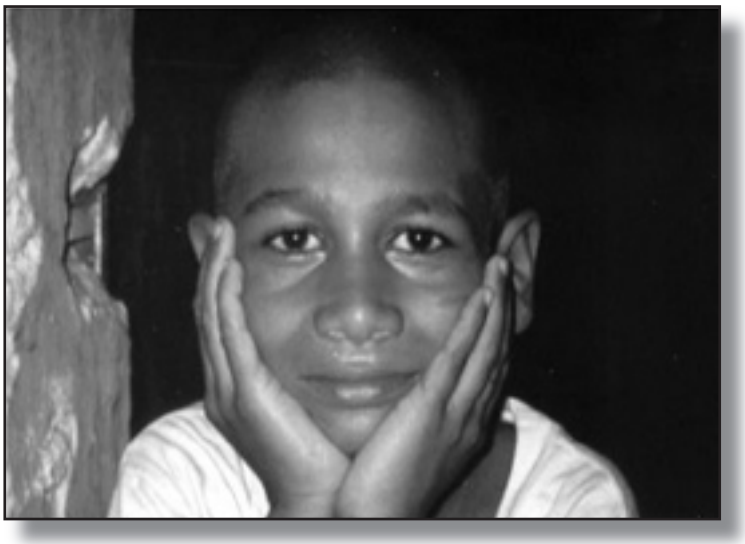

पाठांश (ग)

भारत क्या है?

"भारत बदल रहा है" "भारत में कुछ नहीं बदल रहा है" "भारत बड़ी तेजी से बदल रहा है" "भारत बहुत ही धीरे-धीरे बदल रहा" और "भारत न कभी बदला है और न ही बदलेगा", यह सब बातें विदेशी भी कह रहे हैं और भारतीय स्वंय भी। मुश्किल तो यह है कि इन सब बातों में कुछ न कुछ सचाई का अंश है इसलिए इनमें से किसी को बिल्कुल ग़लत नहीं कहा जा सकता। पर इनमें से कोई बात पूरी तरह से ठीक भी नहीं है। भारत विशाल है और यहां इतनी विविधताएं हैं कि देश के बारे में जो बात भी कही जाए वह किसी एक भाग के लिए सही बैठेगी। यदि हम कहें कि "भारत में बहुत सेब होते हैं" तो यह बात हिमाचल प्रदेश और कश्मीर के लिए ठीक है और केरल और आन्ध्र के लिए ग़लत है। पर यदि हम कहें कि "भारत में सेब की पैदावार काफी होती है" तो यह ठीक रहेगा। यदि हम कहें कि "भारत में खेती के आधुनिक तरीके अपनाए जाते हैं" तो यह बात पंजाब के लिए उत्तर प्रदेश की अपेक्षा ज़्यादा सच होगी। पर यह सचाई से कहा जा सकता है कि हमारे यहां खेती में सुधार हुआ है। बिल्कुल इसी दृष्टि से यह कहना भी ठीक होगा कि पिछले कई वर्षों में भारत बहुत बदल गया है और दिन प्रतिदिन तेजी से बदलता जा रहा है।

पाठांश (घ)

अपनी पहली ही फ़िल्म 'कंपनी' से अपनी पहचान बनाने और एवार्ड जीतने वाले विवेक ओबरॉय ने पीछे मुड़कर नहीं देखा है।

अपनी नई फिल्म 'क्यूँ हो गया न .... ' के प्रचार के लिए वे पिछले दिनों दिल्ली आए तो उन्होने बड़ी बेबाकी और साफ़गोई से बातचीत की।

वे कहते हैं, मेरा सबसे बड़ा सपना कोई प्रतिष्ठित फ़िल्मी पुरस्कार या कोई ज़ोरदार किरदार निभाने का नहीं है बल्कि अपनी माँ यशोधरा ओबरॉय के नाम पर बने फाउंडेशन के तहत एक कैंसर अस्पताल बनवाना है। जहाँ ग़रीबों और निचले तबके के लोगों का मुफ़्त इलाज हो सके।

अभी तक विवेक ने हर बार अलग अलग तरह के किरदार निभाए हैं चाहे वो 'कंपनी' का 'चंदू' हो या उनकी रिलीज़ होने वाली फ़िल्म 'क्यूँ हो गया न .....' का अर्जुन।

वे मानते हैं कि 'क्यूँ हो गया न...' के लिए उन्हें उतनी मेहनत नहीं करनी पड़ी जितनी 'कंपनी' या 'साथिया' के लिए।

क्योंकि उन फ़िल्मों में अपने किरदार को और बेहतर समझने के लिए मुंबई की चालों और बदनाम गलियों में भी जाना पड़ा।

नियम से पूजा पाठ करने वाले विवेक ओबरॉय ईश्वर का हर बात के लिए शुक्रिया अदा करते हैं। मशहूर अभिनेता और अपने पिता सुरेश ओबरॉय से वो पटकथा और फ़िल्मों के चुनाव पर ज़्यादा बातचीत नहीं करते। वे कहते हैं "मैं अपने फैसले खुद ही करता हूँ और इसमें किसी का दख़ल नहीं रहता"।

आज फ़िल्म इंडस्ट्री में सिर्फ़ सेक्स और शाहरूख ख़ान ही बिकता है, के सवाल पर उनका मानना है कि "ये सोचना निर्देशक का काम है कि वो क्या परोसता है, जबकि जनता जानती है कि उसे क्या देखना है। वैसे कॉमेडी भी चल रही है और लवस्टोरी भी"।

ग़रीबों के लिए कैंसर अस्पताल बनाने के अलावा वे और भी सामाजिक कार्य करना चाहते हैं और कर रहे हैं। लोगों से मिले प्यार और सम्मान को वापस लौटाने में यकीन करने वाले विवेक ओबरॉय मानसिक और शारीरिक तौर पर बीमार अकेली औरतों और बच्चों की सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हैं।

तम्बाकू विरोधी अभियान से भी वो जुड़े हैं और कहते हैं कि "रीयल-लाइफ" में मैं सिगरेट नहीं पीता। लेकिन जब तक बेहद ज़रूरी न हो "रील-लाइफ" में भी सिगरेट नहीं जलाता।

अपनी आने वाली फ़िल्म 'किसना' और वेनिस फ़िल्म समारोह में दिखाई जाने वाली 'युवा' को लेकर वो ख़ासे खुश दिखे।